भाकृअनुप-केंद्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपूर

कपास की खेती के लिए २६ सितम्बर - २ अक्तूबर, २०१६ साप्ताहिक सलाह

"सलाहकार संबंधित राज्यों के राज्य कृषि व कृषि विश्वविद्यालयोंs से प्राप्त सूचनाओं के आधार पर किया जाता है"

साप्ताहिक सलाह

	सितम्बर								अक्तूबर					
	वास्तविक वर्षा (मिमी)								मौसम विभाग व्दारा संभावित वर्षा (मिमी)					सलाह
दिनांक	15to21	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	1	2	
पंजाब														उत्तरी क्षेत्र में अधिकांष कपास क्षेत्र में फसल गूलर प्रस्फुटन अवस्था में है। सम्पूर्ण उत्तरी भारत में अधिकांष क्षेत्रों में फसल बहुत अच्छी है। चुनाई का कार्य चल रहा है। सफेद मक्खी की संख्या कुछ स्थानों पर आर्थिक हानि स्तर से अधिक है जिसका उपज पर कोई दुश्प्रभाव नहीं होगा। यद्यपि गूलर चिपचिपे मीठे पदार्थ तथा काली फफँूद से प्रभावित हो सकते हैं यदि वे अधिक समय तक फसल में रहते हैं। पंजाब की संकलित रिपोर्ट में देखा गया है कि फरीदकोट में सर्वेक्षण किए गए 04 गांवों में सफेद मक्खी की संख्या खारा में 03 तथा बहलेवाल गांव में 01 स्थान पर आर्थिक हानि स्तर से अधिक पाई गई।बहलेवाल गांव के एक स्थान पर बीटी संकर में जैसिड का प्रकोप आर्थिक हानि स्तर से उपर दर्ज किया गया। भटिंडा जिले में फसल पुश्पन तथा फलन अवस्था में है। सर्वेक्षण किए गए 27 गांवों में से 10
भटिंडा	0.9	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	
फिरोजपुर	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	
मुकतसर	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	
मानसा	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	

														गांवों में बीटी संकरों में 1-4 स्थलों मे सफेद मक्खी की संख्या आर्थिक स्तर से अधिक पाई गई। ये 10 गांव हैं-राजगढ़, कुड्डे, कमलू, मौर कालन, कोटली खुर्द, जोगानन्द, भिल पट्टी, बांगी दीपा, संगत, घुड्डा तथा बजक।
हरियाणा														हरियाणा के 05 गांवों में सर्वेक्षण किया गया। इनमें सफेद मक्खी, जैसिड तथा फूलकीट(थ्रिप्स) की संख्या आर्थिक हानि स्तर से कम दर्ज की गई , जबकि सफेद मक्खी के षिषुओं (अर्भकों) की संख्या सिरसा जिले के कुछ स्थानों पर कपास की फसल की गूलर निर्माण तथा गूलर प्रस्फुटन अवस्था में दर्ज की गई।
सिरसा	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	
हिसार	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	
फ़तेहाबाद	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	
राजस्थान														राजस्थान के श्रीगंगानगर के तीन गांवों, साधुवाली, कालिया तथा कोठा में बीटी संकरों पर किए गए सर्वेक्षण में सफेद मक्खी की संख्या इन तीनों गांवों के 01 से 04 स्थानों पर आर्थिक हानि स्तर से अधिक दर्ज की गई। प्रस्फुटित गूलरों से कपास चुनाई नियमित अंतराल पर षीघ्र करते रहें अन्यथा चिपचिपे मीठे पदार्थ(हनी ड्यू) से तंतु की गुणता में ह्रास आ सकता है।
हनुमानगढ़	0	0	0	4.3	2.4	0	0	0	0	0	0	0	0	
श्रीगंगानगर	0	0	0	0	6	0	0	0	0	0	0	0	0	
बांसवाड़ा	30	0	25	0	0.1	6.5	1.8	0	0	0	1	1	0	
उड़ीसा														फसल इस समय षीर्श पुश्पन अवस्था में है। फसल की यह अवस्था जलभराव के लिए अति संवेदनषील होने के कारण पानी की निकासी भली प्रकार करते रहें। फलन अंगोे के झड़न को रोकने के लिए प्लानोफिक्स का फसल पर छिड़काव सिफारिष के अनुसार 15 दिनों के अंतराल पर करें। भवानीपटना जिले के 03
कोरापुट	60.7	6.6	16	25	0	2.5	1.7	2.2	13	5	9	24	29	
कालाहांडी	43	3	4.8	2.1	9.2	0	7.2	13	23	16	19	16	14	
बोलांगीर	14.2	0	16	7.3	0.4	2.3	8.8	17	19	16	19	15	3	

														गांवों में सर्वे किया गया। जैसिड का प्रकोप सहजेट गांव में 03 स्थानों पर, करलाकोट गांव के 4 स्थानों में तथा दामूदरपुर गांव के 4 स्थानों में आर्थिक हानि स्तर से अधिक दर्ज किया गया।
गुजरात														गुजरात के प्रमुख कपास उत्पादक क्षेत्रों में फसल गूलर विकास अवस्था में है। कुछ भागों में रूक-रूक कर लगातार वर्शा होते रहने से अंतःसस्य क्रियाओं में रूकावट आई है। नाषीकीट ग्रसन के लिए 05 गांवों में किए गए सर्वेक्षण में जैसिड को प्रकोप तूना, सोडगाम तथा करसड गांवों के प्रत्येक 02 स्थलों में तथा लूना गांव के एक स्थान पर बीजी- संकरों में जैसिड का प्रकोप आर्थिक हानि स्तर से अधिक दर्ज किया गया। तूना तथा पनसोली गांवो में प्रत्येक के एक स्थल पर फूलकीट(थ्रिप्स) का ग्रसन आर्थिक हानि स्तर से अधिक रिकार्ड किया गया। तूना तथा सोडगाम गांवों के क्रमषः 02 तथा 01 स्थान पर गूलर की गुलाबी सूंडी का ग्रसन आर्थिक हानि स्तर से अधिक पाया गया। जूनागढ़ जिले के सर्वे किए गए 06 गांवों में से प्रभातपुर तथा बारदिया गांवों में प्रत्येक के स्थान पर गुलाबी सूँडी का प्रकोप आर्थिक हानि स्तर से अधिक दर्ज किया गया। बगडू गांव के एक स्थान पर एटीएम बीजी-प्प्संकर में हेलीकोवर्पा आर्मिजेरा का प्रकोप आर्थिक हानि स्तर से अधिक दर्ज किया गया।
अमरेली	194	11	0	0.7	0.6	0	0	0	0	0	0	0	10	
भावनगर	147	2.9	0	0.8	0	0	0	0	0	0	0	0	10	
जामनगर	11.7	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	
राजकोट	82.5	9.9	0	1.9	0	0	0	0	0	0	0	0	10	
भरूच	75.3	0.7	4.8	2.8	8	6.9	2.2	0	0	0	0	0	0	
सबरकांठा	8.7	0	2.2	1.7	0	0	0	0	0	0	0	0	0	
सुरेन्द्रनगर	11.5	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	
अहमदाबाद	23.2	0	1.5	0.3	0	0	0	0	0	0	0	0	0	
वडोदरा	70.2	0	13	8.2	0.4	2.3	0	0						
पाटन	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	
मेहसाना	3.9	0	0	0.2	0	0	0	0	0	0	0	0	0	
मध्य प्रदेश														रोगों का प्रकोप नहीं पाया गया। कुछ गांवो में रस चूशक कीटों की संख्या आर्थिक हानि स्तर से अधिक दर्ज की गई। सिफारिष किए गए नियंत्रण उपाय प्रारंभ किए जा सकते हैं।
खरगोन	121	12	2	2.6	0	0	1.5	0.3	5	5	5	7	2	
धार	93.9	0.2	9.8	13	2	8	3.5	0.4	10	10	5	5	0	
खंडवा	92.2	17	1.8	1.7	0	0	29	0	6	8	5	7	2	

महाराष्ट्र													
धुले	73.7	0	0.6	3.8	9.4	0.8	0	17	2	3	0	4	2
नांदूरबार	103	0	15	6.2	0.5	9.5	3.3	1.3	0	0	0	0	0
जलगांव	108	16	15	0.5	7.2	6.5	5.5	1.8	4	3	0	3	2
अहमदनगर	129	5	18	23	22	10	1.1	3.5	3	4	3	4	12
औरंगाबाद	78.2	4.7	4.4	1	26	9.1	1.5	0.2	2	2	0	4	4
जालना	74.8	1.5	2.2	3.8	52	36	2.3	0	0	4	2	0	1
बीड़	122	5.6	24	59	92	41	3.1	0.7	0	7	3	1	5
नांदेड़	101	17	16	19	45	12	11	5.1	5	7	10	2	5
परभणी	144	17	41	26	72	20	9.5	0.1	0	7	3	2	3
हिंगोली	92	13	0.5	21	49	6	6.3	3.5	10	14	10	5	7
बुलढाना	47.4	1.7	4.7	0.2	29	19	1.9	0	4	4	1	1	2
अकोला	58.7	0	1.4	4	12	11	1.9	3.4	5	6	2	1	6
वासिम	45.4	3.5	0	18	31	4.5	3	13	5	5	1	1	4
अमरावती	69.5	7.7	3.3	12	17	11	15	2.2	5	8	1	1	10
यवतमाल	51.4	18	0.4	4.1	5.6	13	13	8.9	25	9	4	4	5
वर्धा	41	2.4	0	0	0.2	4.5	15	8.3	20	12	5	5	7
नागपुर	11.8	2.9	0.3	1.2	1.9	9.7	20	7.1	25	15	7	9	7
चन्द्रपुर	45.5	27	5.2	0.6	3.8	58	26	11	25	12	9	7	7

सितंबर के आखिरी पखवाडे में अच्छी वर्शा हुई। मृदा में पर्याप्त नमी है। वर्धक मात्रा के रूप में मृदा में पर्याप्त नमी है। वर्धक मात्रा के रूप में मृदा में उर्वकों के अनुप्रयोग (20 किग्रा यूरिया, 10-15 किग्रा म्यूरेट ऑफ पोटा श/एकड़) का अच्छा समय है। इसके साथ ही पोशकतत्वों में यूरिया 2%(20ग्रा/ली) अथवा 1-2%(10-20 ग्रा/ली) पोटेषियम नाइट्रेट +1.0%(10ग्रा/ली) मेग्नीषियम सल्फेट का 2-3 बार 5 से 7 दिनों के अंतराल पर फसल पर छिड़काव करने की सलाह दी जाती है। जल भराव , आकस्मिक मुरझान तथा फलन अंगों के झड़न से बचने के लिए अतिरिक्त वर्शाजल की निकासी खेत से करते रहें। प्लानोफिक्स का 15 दिनों के अंतराल पर फसल पर छिड़काव करने की सख्त सिफारिष की जाती है। राहुरी में 03 गांवों में सर्वे किया गया। कपास की सिंचित फसल में जैसिड की संख्या साडे तथा गोतुम्बे अखाडा गांवों के 01 तथा 03 स्थानों में जैसिड की संख्या आर्थिक हानि स्तर से अधिक पाई गई। नांदेड जिले के 05 गांवों(पिंपलगाव, फुलवाल, करोडा, वारतला तथा तुप्पा) में सर्वेक्षण किया गया। इन सभी स्थानों में सफेद मक्खी की संख्या आर्थिक हानि स्तर से अधिक दर्ज की गई। जैसिड , फूलकीट (थ्रिप्स) तथा गुलाबी सूँडी 03 से 05 स्थानों पर आर्थिकहानि स्तर से अधिक पाए गए। अकोला जिले के 03 गांवों(निमकरडा, उगवा तथा आगर) में सर्वेक्षण किया गया। इनमे जैसिड तथा फूलकीट (वृध्दिषील कपास के पौधों पर) क्रमषः 03 से 04 तथा 02 से 03 स्थानों पर आर्थिक हानि

														स्तर से उपर दर्ज किए गए।
तेलंगाना														तेलंगाना के सम्पूर्ण कपास उत्पादक क्षेत्रों में भारी वर्शा हुई है। मृदा में पर्याप्त नमी है। वर्धक मात्रा के रूप में मृदा में उर्वरकों के प्रयोग का उचित समय है। उर्वरकों का मृदा अनुप्रयोग इस प्रकार करें- 20 किग्रा यूरिया $10-15 किग्रा म्यूरेट आफ पोटाष प्रति एकड़ करें। पोशकतत्वों का फसल पर छिड़काव के रूप में यूरिया 2%(20ग्रा/ली) अथवा 1-2% (10-20ग्रा/ली) पोटेषियम नाईटेªट के से साथ 1.0% (10 ग्रा/ली) मेग्नीषियम सल्फेट का अनुप्रयोग 2-3 बार 5-7 दिनों के अंतराल पर करने की सिफारिष की जाती है। जलभराव , आकस्मिक मुरझान तथा फलन अंगों के झड़न से बचने के लिए फसल से अतिरिक्त वर्शाजल की निकासी करते रहें। प्लानोफिक्स का 15 दिनों के अंतराल पर फसल पर छिडकाव करने की सख्त सिफारिष की जाती है।
आदिलाबाद	48.9	4.2	14	2.5	58	31	21	6.9	69	43	28	6.9	21	
वारंगल	98.4	49	22	78	43	21	20	11	2.5	0	4.2	2.1	14	
खम्मन	37.9	21	20	46	21	9.1	14	7.6	1.7	0	23	7.2	14	
कारिंगर	61.4	7.2	26	34	32	55	24	3.2	2.2	1.7	2.2	1.3	10	
नालगोंडा	53.9	28	11	90	7.5	5.3	2.3	6.2	2	0	18	5.6	60	
महबूबनगर	68.4	7.8	16	25	7.6	22	8.3	5	0	9.3	0	1.9	49	
आंध्रप्रदेश														आंध्रप्रदेष के कपास क्षेत्र में भारी वर्शा होने से जलभराव की स्थिति बनी। अधिकांष जिलों में गूलर की गुलाबी सूँडी का प्रकोप फूलों, तथा गुलाबवत् फूलों में देखा गया। यद्यपि इसका प्रकोप अनन्तपुर तथा कडप्पा जिलों में आर्थिक हानि स्तर तक पहुँच गया। फीरोमोन ट्रैप 4 से 5 प्रति हेक्टर की संख्या में स्थापित करके गुलाबी सूँडी की निगरानी करें। कपास पादप स्वास्थ्य परामर्षी में दी गई सिफारिषों के अनुसार इसका प्रबंधन करें। लगातार वर्शा होते रहने से खड़ी फसल में पत्तियों के पीले पड़ने, झड़ने व मुरझाकर लटकने तथा पौधों के मुरझान की
गुन्टूर	48.7	23	57	45	3.9	2.7	7.8	4.1	7.9	3.5	0	8.2	23	
प्रकासम	18.6	5.6	14	2	5.7	0.6	0.2	4.8	10	2.2	22	19	25	

														समस्या देखी जा रही है। फसल से पानी की निकासी तुरंत करें। वर्धक मात्रा के रूप में 25-35 किग्रा यूरिया , 10-15 किग्रा म्यूरेट आफ पोटाष प्रति एकड़ मृदा अनुप्रयोग करें तथा पोशकतत्वों का जैसे , यूरिया 2% (20 ग्रा/ली) अथवा 1-2% (10-20ग्रा/ली) पोटेषियम नाइट्रेट के साथ 1.0% मेग्नीषियम सल्फेट का 2-3बार 5-7 दिनों के अंतराल पर फसल पर छिडकाव करने की सलाह दी जाती है। गोरू तथा गुतका के साथ अंतःसस्य क्रियाएँ करें। गुंतूर जिले में 10 गांवों में किए गए सर्वेक्षण में जैसिड तथा फूलकीट(थ्रिप्स) का प्रकोप आर्थिक हानि स्तर से कम पाया गया। नांदियाल जिले के 02 गांवों में किए गए सर्वे में भी जैसिड , फूलकीट(थ्रिप्स) तथा गुलाबी सूँडी का प्रकोप आर्थिक हानि सीमा से कम दर्ज किया गया।
कर्नाटक														अधिकांष कपास उत्पादक क्षेत्रों में फसल गूलर विकास अवस्था में है। धारवाड तथा हवेरी जिलों के कपास उत्पादक क्षेत्रों में मौसम षुश्क रहा लेकिन बेलगाम , गुलबर्गा और बीदर जिलों में भारी वर्शा हुई है। हवेरी , धारवाड तथा बेलगाम जिलों के कपास उत्पादक क्षेत्रों के कुछ चुनिंदा छिट-पुट स्थानों में गुलाबी सूँडी तथा मिरिड बग के लिए फसल सुरक्षा उपाय किए गए। किसानों के कुछ खेतों में 110 दिनों से अधिक की फसल में प्ररोह कर्तन का कार्य किया गया। हवेरी , धारवाड तथा बेलगाम जिलों में अगेती बोई गई बीटी कपास की फसल में मिरिड बग तथा गुलाबी सूँडी का प्रकोप देखा गया। बीटी कपास के खेतों में उपयुक्त संख्या में फीरोमोन टैप स्थापित करके गुलाबी सूँडी के
धारवाड़	14.5	0.5	3.4	0.6	0	2.4	0.5	1.3	4	8	10	10	5	
हवेरी	16.5	0.5	14	1.6	0	0.9	0.7	0	3	3	9	6	6	
मैसूर	2.8	0.5	0.8	0	3.4	2.1	2.3	2.8	3	4	4	3	4	

														पतंगों को बडे पैमाने पर पकड़ें। हवेरी तथा धारवाड जिलों के कुछ भागों में गूलर सड़न रिकार्ड की गई। हवेरी ,धारवाड तथा बेलगाम जिलों के संबध्द भागों में बीटी कपास में गुलाबी सूँडी के प्रबंधन के लिए विषेश निगरानी तथा एहतियाती उपाय करने का सुझाव दिया जाता है। मिरिड बग प्रकोप की रोकथाम के लिए एसीफेट 1.0ग्रा/ली की दर से फसल पर छिड़काव करें। रायचूर में फसल पुश्पन से गूलर निर्माण की प्रारंभिक अवस्था में है। सिंचित क्षेत्रों में फसल वृध्दि अच्छी है जबकि बारानी क्षेत्रों में फसल के लिए नमी की कमी महसूस की जा रही है। बेल्लारी जिले के कुछ क्षेत्रों में लाल पत्ती रोग भी देखा गया है। जिन क्षेत्रों में वर्शा अधिक हुई है वहाँ कुछ क्षेत्रों में पत्तियों में पीलापन देखा जा रहा है। धारवाड जिले में 09 गांवों में बीटी कपास पर सर्वे किया गया। कुनाबेवू गांव के एक स्थान में जैसिड की संख्या आर्थिक हानि स्तर से अधिक पाई गई। इसके साथ ही क्यालाकाॅन तथा कराडागी गांवों के क्रमषः 02 तथा 01 स्थानों पर बीटी संकरों में फूलकीट (थ्रिप्स) का ग्रसन आर्थिक हानि स्तर से अधिक दर्ज किया गया। सर्वे किए गए 05 गाँवों (हुलागूर/ बंकापुर/ वरादहा/ कुनाबेवू तथा काकोल) के 01-03 स्थानों में गुलाबी सूँडी का प्रकोप आर्थिक हानि स्तर से अधिक रिकार्ड किया गया। रायचूर जिल में 11 गांवों का सर्वेक्षण किया गया। इनमें से गुरागुंटी गांव में फूलकीट (थ्रिप्स) की संख्या 06 स्थानों पर तथा सफेद मक्खी व जैसिड की संख्या 02 स्थानों पर आर्थिक हानि स्तर से अधिक दर्ज की

														गई।
तामिलनाडु														फसल कली विकास अवस्था में है। विगत सप्ताह वर्शा नहीं हुई तथा बढ़ते तापमान के साथ सूखाकाल से फसल की वृध्दि प्रभावित हुई। नत्र तथा पोटाष के मृदा अनुप्रयोग की सिफारिष की जाती है। फसल को खरपतवार से मुक्त रखने के लिए 32 से 35 दिनों की फसल में हाथ से निराई करें। रस चूशक कीटों की उपस्थिति दर्ज की गई है। मैनुअल के अनुसार रोकथाम के उपाय करें। रोगों का प्रकोप नहीं है। श्रीविल्लीपुत्तूर के ग्रीश्मकालीन कपास क्षेत्रों में फसल गूलर प्रस्फुटन अवस्था में है। सर्वे किए गए 03 गांवों (श्रीविल्लीपुत्तूर , माल्ली तथा मेट्टूथेरू) में 2-4 स्थानों पर जैसिड प्रकोप आर्थिक हानि स्तर से अधिक दर्ज किया गया और गुलाबी सूँडी प्रत्येक गांव के 05 स्थानों में आर्थिक हानि स्तर से अधिक पायी गई।
पेरंबलुर	0	0	0	0	0	0	0	0	2	20	3	0	0	
सलेम	0.4	0	0.1	0	0	0	0	0	5	10	0	0	0	
त्रिची	0.8	0	0.3	0	0	0	0	0	15	10	0.5	0	0	
विरुडुनगर	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0.5	0	0	0	

आदर्श वर्षा					
वर्षा मि.मी.	<5	5-20	21-50	50-80	>80

साप्ताहिक सलाहकार संयोजक टीम:

डा. के.आर. क्रांति, डा. ए. एच. प्रकाश, डा. संध्या क्रांति, डा. डी. मोंगा, डा. ब्लेज़ डी-सूजा, डा. एस. बी. सिंह, डा. सिंगनधूपे, डा.एम.वी. वेणुगोपालन, डा. इसाबेला अग्रवाल, डा. एम.सबेस, डा. विश्लेष नगरारे, डा. ऋषि कुमार, डा. एन अनुराधा नराला, डा. दीपक नगराले, श्रीमति संगीता औरंगाबादकर एवं कु. सचिता एलेकर **हिन्दी संसकरण:** डॉ. उल्हास नंदनकर**,** मुख्य तकनीकी अधिकारी एवं प्रभारी, हिन्दी अनुभाग**,** केकअनुसं, नागपुर (महाराष्ट्र)